सफलता का आधार - साफ़ दिल मुराद हांसिल

आज विशेष अमेरिका में होने वाली मुख्य टीचर्स आर.सी.ओ. की और एन.सी.ओ. की मीटिंग प्रति समाचार ले वतन में गई तो बापदादा से मधुर मिलन हुआ और बेहद के बाप ने बेहद की दृष्टि देते हुए मुस्कराते बोला – बच्ची, क्या समाचार लाई हो ? मैंने मीटिंग का समाचार सुनाया और दादी जानकी, जयन्ती बहन और लण्डन की सभी सखियों की यादप्यार दी तो बाबा बोले – जनक बच्ची को सर्व के प्रति भी, साथ में फारेन की टीचर्स प्रति बहुत दिल में उमंग-उत्साह रहता है कि बहुत जल्दी से जल्दी सब निर्विघ्न बन उड़ती कला में उड़ते रहे, उड़ाते रहे। यह बहुत अच्छा है। निमित्त आत्मा उमंग-उत्साह वाली है तो चारों ओर वायुमण्डल वही बन ही जाता है। जयन्ती बच्ची भी चक्रवर्ती बन अच्छा पार्ट बजा रही है, दिल पर है। साथ में सर्व यू.के. के सर्विस साथियों को भी बाबा ने याद किया और कहा कि एक-दो से कम नहीं हैं। एक-दो से आगे हैं।

फिर मैंने समाचार सुनाया कि वहाँ का प्लैन वा टापिक्स भी बनाई है :- ए-स्वउन्नति के प्रति बी- लगन की अग्नि सदा तेज रहे। सी- आपसी युनिटी डी- फास्ट प्रोग्रेस ई- बेहद के विश्व सेवा में वृद्धि, ऐसी टापिक्स रखी हैं।

बापदादा बहुत मीठा मुस्कराया और बोला – टापिक्स तो बहुत अच्छी रखी हैं। इन सब धारणाओं के लिए मुख्य आधार है - क्लीन और क्लीयर मन और बुद्धि की। और सबसे मुख्य - ''साफ दिल मुराद हांसिल।'' इसी युक्ति से सर्व बातों में सहज सफलता मिल जाती है और उड़ते रहते हैं। बच्चों को रोज़ रात को स्व-कल्याणकारी बन समाप्ति समारोह मनाना चाहिए। जैसे शुरू में ब्रह्मा बाप ने छोटे बच्चों को युक्ति बताई थी कि सदा सुबह को मास्टर ब्रह्मा बनो, दिन में मास्टर विष्णु और रात को मास्टर शंकर बन सारे दिन का जो भी मन में, बुद्धि में वेस्ट, निगेटिव का किचड़ा

भर जाए तो उसको बिन्दी लगाए, विनाश कर समाप्ति कर सो जाओ। सुबह को जैसे स्वच्छ साफ़ फ़रिश्ता जीवन, ब्रह्म से ब्राह्मण पधारे हैं, ऐसे पार्ट बजाओ। इससे साकार सम्बन्ध में भी सहज युनिटी, स्नेह, स्वमान, सम्मान आ ही जाता है। सफलता सहज होती है।

उसके बाद बाबा ने जैसे सभी फारेनर्स को इमर्ज कर दृष्टि दी और बोले – बापदादा विशेष अव्यक्त पालना की रचना, सर्व बच्चों को याद करते और शक्तिशाली सकाश देते रहते हैं कि फास्ट और फर्स्ट जाकर दिखायें। बाकी सफलता तो होनी ही है। हर बच्चा सफलता स्वरूप है। उसके बाद बाबा ने हर देश के हर एक बच्चे को नाम सहित सामने इमर्ज कर यादप्यार दिया और दृष्टि द्वारा सफलता का वरदान दिया।

उसके बाद अमेरिका निवासी बच्चों को विशेष 'पीस विलेज' की सेवा के निमित्त बच्चों को नाम सहित याद किया, प्यार दिया और कहा मोहिनी बच्ची, कला बच्ची, गायत्री और सर्व सेवा के साथियों ने बहुत प्यार से सेवा की है। बापदादा सभी को बड़े स्नेह से मुबारक दे रहे थे। मोहिनी बहन को बहुत-बहुत स्नेह स्वरूप से दृष्टि देते बाबा बोले – बच्ची ने हिम्मत और बड़ी दिल से प्रोग्राम बनाया है, बड़ी दिल पर बड़ा बाबा भी खुश है, मददगार है। कला बच्ची भी अन्तर्मुखी गुप्त बन अच्छा पार्ट बजा रही है। कला, गायत्री दोनों स्नेह की सचली कौड़ी हैं। बाबा समय प्रति समय बहुत मदद देता रहता है। अच्छी आगे बढ़ रही हैं। फिर बाबा ने रिक, सेण्डी और अन्य पाण्डव साथियों को याद दिया और कहा सबने दिल से सहयोग दे सेवा की है। रिक बच्चा तो आदि से अमेरिका सेवा के प्रति निमित्त बना है, आदि रत्न है। साथ में अंकल, आंटी परिवार का भी स्थापना में बहुत शानदार पार्ट है, इसलिए सारे परिवार को बापदादा बहुत-बहुत यादप्यार दे रहे हैं। बोलो, सभी को बापदादा का यादप्यार पहुँचा ना। अच्छा, सबको फ़रिश्ते रूप से ओम् शान्ति। ऐसे ही साकार वतन में पहुँच गई।